International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

समावेशी शिक्षा की अद्भुत परम्पराएं

अनवर

Student of 4th Semester, Department of English, Government Vivekanand College Maihar, Madhya Pradesh

संक्षेप

लेख में चर्चा का मुख्य मुद्दा समावेशी शिक्षा की अद्भुत परंपरा में मुख्य चुनौतियाँ हैं। अधिकांश यूरोपीय देशों ने समावेशी शिक्षा को सभी व्यक्तियों के लिए समान शैक्षिक अधिकार सुरक्षित करने के साधन के रूप में स्वीकार किया है। हालाँकि समावेशी शिक्षा की परिभाषाएँ और कार्यान्वयन बहुत भिन्न हैं। उनकी चर्चा समावेशी शिक्षा की एक संकीर्ण और एक व्यापक परिभाषा के संबंध में की गई है जो अवधारणा के क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर आयाम के बीच अंतर करती है। लेख समावेशी शिक्षा में छात्रों के सीखने के परिणामों के साथ-साथ समावेशी शिक्षा शास्त्र के लिए शिक्षक की दक्षताओं पर भी जाता है। कोई भी देश अभी तक एक ऐसी स्कूल प्रणाली का निर्माण करने में सफल नहीं हुआ है जो विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा परिभाषित समावेश के आदर्शों और इरादों पर खरा उतरता हो। अलगाव से बचने के लिए प्लेसमेंट समावेशी शिक्षा का सबसे लगातार मानदंड प्रतीत होता है। समावेशी शिक्षा में शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं की गुणवत्ता को कम प्राथमिकता दी जाती है।

परिचय

समावेशी शिक्षा को आदर्शों और कार्रवाई से जुड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अगर हम यूनिसेफ, यूनेस्को, यूरोप की परिषद, संयुक्त राष्ट्र और यूरोपीय संघ जैसे विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों की ओर देखें तो समावेश की परिभाषाओं में कई सामान्य आदर्श तत्व हैं। हार्डी और वुडकॉक 2015, कियुप्पीस 2011 समावेशन में सभी छात्रों के लिए शिक्षा का अधिकार शामिल है। समावेशन से जुड़े मूल्य अंतः क्रियावादी विचारधारा से जुड़े हैं और ये संगति, भागीदारी, लोकतंत्रीकरण, लाभ, समान पहुंच, गुणवत्ता, समानता और न्याय के इर्द-गिर्द घूमते हैं। समावेशन में सभी छात्रों के लिए स्कूल संस्कृति और पाठ्यक्रम में संगति और भागीदारी शामिल है। 1996-1994 में सलामांका वक्तव्य के बाद से, अधिकांश यूरोपीय देशों ने स्वीकार किया है कि समावेशी शिक्षा विभिन्न विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले सभी व्यक्तियों के लिए समान शैक्षिक अधिकार सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है।

कई देशों में समावेशी शिक्षा की व्यावहारिक स्थिति स्कूलों के बीच और यहाँ तक कि स्कूलों के भीतर भी बहुत भिन्न है। जैसा कि एलन (2008) ने निष्कर्ष निकाला है हालांकि, स्कूलों के भीतर समावेशी वातावरण बनाने और समावेशी तरीके से पढ़ाने के तरीके के बारे में गहरी अनिश्चितता प्रतीत होती है। सभी देशों में समावेशी शिक्षा के निर्माण और कार्यान्वयन के बीच एक अंतर प्रतीत होता है। यदि समावेशन, अपनी

सभी जटिलताओं के बावजूद, इतना महत्वपूर्ण सिद्धांत है, तो यह नीति में आसानी से पहचाने जाने योग्य, स्वतंत्र इकाई क्यों नहीं है, और क्यों समावेशन का उल्लेख अक्सर कई नीतियों में केवल चलते-फिरते ही किया जाता है।

(हार्डी और वुडकॉक 2015, 117).

इस लेख में, मैं निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर इरादे के रूप में समावेश और व्यवहार के रूप में समावेश के बीच संबंधों पर चर्चा करूंगा। समावेशी शिक्षा को कैसे समझा और अभ्यास किया जाता है, और समावेशी शिक्षा के विकास में मुख्य चुनौतियां क्या हैं।

ओईसीडी (OECD) की एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि समावेशी शिक्षा क्या है, इस बारे में आम सहमति है तथा मुख्य चुनौतियां राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी और परिवर्तन के प्रति मनुष्य के अंतहीन प्रतिरोध का मिश्रण हैं। ओईसीडी (OECD-1999) मैं समावेशी शिक्षा की परिभाषाओं, समावेशी प्रथाओं, समावेशी शिक्षा के परिणामों और समावेशी शिक्षा के लिए योग्यताओं पर चर्चा करके इन दावों पर सवाल उठाऊंगा, जैसा कि हाल के शोध में पता चला है, विशेष रूप से यूरोपीय देशों के लिए प्रासंगिकता के साथ। मैं अपनी टिप्पणियों को सामान्य और समग्र रुचि के तत्वों पर केंद्रित करता हूं।

समावेशी शिक्षा:

समावेशी शिक्षा का अर्थ है, कि हम अपने स्कूलों, कक्षाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों को किस प्रकार विकसित और डिजाइन करें ताकि सभी छात्र एक साथ सीखें और भाग लें। समावेशी शिक्षा का मतलब है, सभी छात्रों के लिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करना, उनकी विविध आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा करना, जो उत्तरदायी, स्वीकार्य, सम्मानजनक और सहायक हो। छात्र एक साझा सीखने के माहौल में शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेते हैं, जिसमें उन बाधाओं और रुकावटों को कम करने और हटाने के लिए समर्थन होता है जो बहिष्कार का कारण बन सकती हैं।

समावेशी शिक्षा एक सामान्य शिक्षण वातावरण में की जाती है अर्थात, एक शैक्षिक सेटिंग जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमि और विभिन्न क्षमताओं वाले छात्र एक समावेशी वातावरण में एक साथ सीखते हैं। सामान्य शिक्षण वातावरण का उपयोग अधिकांश छात्रों के नियमित निर्देश घंटों के लिए किया जाता हैं और इसमें कक्षाएँ, पुस्तकालय, जिम, प्रदर्शन थिएटर, संगीत कक्ष, कैफेटेरिया, खेल के मैदान और स्थानीय समुदाय शामिल हो सकते हैं। एक सामान्य शिक्षण वातावरण वह स्थान नहीं है। जहाँ बौद्धिक अक्षमता या अन्य विशेष आवश्यकताओं वाले छात्र अपने साथियों से अलग होकर सीखते हैं।

प्रभावी सामान्य शिक्षण वातावरण:

- प्रत्येक छात्र को उस शिक्षण वातावरण में पूरी तरह से भाग लेने में सक्षम बनाना जो सभी छात्रों के लिए डिज़ाइन किया गया हैं और चुने गए शैक्षिक सेटिंग में साथियों के साथ साझा किया गया हैं।
- सकारात्मक माहौल प्रदान करना, अपने पन की भावना को बढ़ावा देना और उचित व्यक्तिगत, सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षणिक लक्ष्यों की ओर छात्रों की प्रगति सुनिश्चित करना।

- पर्याप्त स्तर का समर्थन प्रदान करके और छात्र-केंद्रित शिक्षण प्रथाओं और सिद्धांतों को लागू करके व्यक्तिगत सीखने की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी हैं।
- सामान्य शिक्षण वातावरण एक समावेशी वातावरण, जहां शिक्षण को मिश्रित क्षमता वाले विद्यार्थियों और सामुदायिक विद्यालय में उनके सहपाठी समूह के साथ प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया हैं, साथ ही एक शिक्षार्थी के रूप में उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी भी बनाया गया है, तथा अधिकांश विद्यार्थियों के नियमित शिक्षण घंटों के लिए इसका उपयोग किया गया हैं।

सिद्धांतों की मार्गदर्शक:

समावेशी शिक्षा, कनाडा अपने सभी कार्यों में उन सिद्धांतों द्वारा निर्देशित है, जो इसके मूल्यों और विश्वासों के अनुरूप हैं। हर कार्य को इन सिद्धांतों के आधार पर परखा जाएगा। हर कार्य, कथन, नीति या प्रकाशन निम्नलिखित सिद्धांतों का सम्मान और प्रचार करेगा:-

- आदर
- गरिमा
- समानता
- विविधता
- मानव अधिकार
- न्याय
- स्वभाग्यनिर्णय
- पारस्परिक जिम्मेदारी
- समावेश
- नैतिक साहस

हमारे मूल्य एवं विश्वास:

- मानव परिवार के सभी सदस्य पूर्ण व्यक्ति हैं। हमारे मानवीय सार को शब्दों, लेबलों, श्रेणियों, परिभाषाओं या आनुवंशिक पैटर्न तक सीमित नहीं किया जा सकता। हर व्यक्ति अद्वितीय हैं। किसी को प्रति स्थापित या कॉपी नहीं किया जा सकता। सभी व्यक्ति अवर्णनीय हैं।
- सभी व्यक्तियों को सम्मान पाने का अधिकार हैं। सम्मान के लिए हर व्यक्ति की गरिमा को मान्यता देना और उसके प्रति चिंता करना आवश्यक है। गरिमा नाजुक होती है, इसे हर तरह के नुकसान से बचाना चाहिए।
- सभी व्यक्तियों में जन्मजात गरिमा होती हैं। गरिमा हमारी है, क्योंकि हम अस्तित्व में हैं। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम कमाते या प्राप्त करते हैं।
- सभी व्यक्तियों की गरिमा अविभाज्य हैं। गरिमा को उचित रूप से नज़र अंदाज, कम या छीना नहीं जा सकता।

- सभी व्यक्तियों की गरिमा समान होती हैं। गरिमा शारीरिक, बौद्धिक या अन्य विशेषताओं पर निर्भर नहीं करती, न ही यह इस बात पर निर्भर करती है कि दूसरे लोग इन विशेषताओं के बारे में क्या राय रखते हैं।
- सभी व्यक्तियों में निहित और समान मूल्य होता हैं। व्यक्तियों के रूप में हमारा मूल्य न तो अर्जित किया जाता है, और न ही संचित किया जाता है। यह स्वास्थ्य की स्थिति या किसी आनुवंशिक या अन्य व्यक्तिगत विशेषता से संबंधित नहीं है।
- सभी व्यक्तियों में विकास और अभिव्यक्ति की जन्मजात क्षमता होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से पोषित होने का अधिकार हैं।
- सभी व्यक्तियों को समान पहुँच और अवसर का अधिकार हैं। समानता के लिए सभी प्रकार के भेदभाव या नुकसान से सुरक्षा और समान भागीदारी को सक्षम करने के लिए आवश्यक सहायता तक पहुँच की आवश्यकता होती है।

** **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समान और समावेशी शिक्षा: सभी के लिए सीखना** **

समान और समावेशी शिक्षा: सभी के लिए सीखना:

6.1 सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने के लिए शिक्षा सबसे बड़ा साधन है। समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा - जबकि वास्तव में अपने आप में एक आवश्यक लक्ष्य है - एक समावेशी और

न्यायसंगत समाज को प्राप्त करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। जिसमें प्रत्येक नागरिक को सपने देखने, पनपने और राष्ट्र में योगदान करने का अवसर मिलता है। शिक्षा प्रणाली को भारत के बच्चों को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखना चाहिए, ताकि कोई भी बच्चा जन्म या पृष्ठभूमि की परिस्थितियों के कारण सीखने और उत्कृष्टता प्राप्त करने का कोई अवसर न खोए। यह नीति इस बात की पुष्टि करती है, कि स्कूली शिक्षा में सामाजिक श्रेणी के अंतरालों तक पहुँच, भागीदारी और सीखने के परिणामों को पढना सभी शिक्षा क्षेत्र के विकास कार्यक्रमों के प्रमुख लक्ष्यों में से एक रहेगा।

6.2 जबकि भारतीय शिक्षा प्रणाली और क्रमिक सरकारी नीतियों ने स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों में लिंग और सामाजिक श्रेणी के अंतराल को कम करने की दिशा में लगातार प्रगति की है। बड़ी असमानता अभी भी बनी हुई है - विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर - विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए जो ऐतिहासिक रूप से कमतर होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह (SEDG) को लिंग पहचान (विशेष रूप से महिला और ट्रांसजेंडर व्यक्ति), सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान (जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, ओबीसी और अल्पसंख्यक), भौगोलिक पहचान (जैसे छात्रों से छात्र) के आधार पर मोटे तौर पर वर्गीकृत किया जा सकता है। गाँव, छोटे शहर और आकांक्षात्मक जिले, विकलांग (सीखने की अक्षमता सहित), और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ (जैसे कि प्रवासी समुदाय, निम्न आय वाले घर, कमजोर परिस्थितियों में बच्चे, तस्करी के शिकार बच्चों के बच्चे, बाल भिखारियों सहित अनाथ बच्चे) शहरी क्षेत्रों में, और शहरी गरीब। जबकि स्कूलों में समग्र नामांकन ग्रेड 1 से ग्रेड 12 तक लगातार घटता है। नामांकन में यह गिरावट इनमें से कई SEDG के लिए अधिक स्पष्ट है, इनमें से प्रत्येक SEDG के भीतर महिला छात्रों के लिए और भी अधिक गिरावट आती हैं, और अक्सर उच्च शिक्षा में भी तेज होती है। सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान के भीतर आने वाले SEDG का संक्षिप्त स्थिति अवलोकन निम्नलिखित उप-वर्गों में दिया गया है।

6.2.1 U-DISE 2016-17 के आंकड़ों के अनुसार, लगभग 19.6% छात्र प्राथमिक स्तर पर अनुसूचित जाति के हैं, लेकिन उच्च माध्यमिक स्तर पर यह अंश 17.3% है। ये नामांकन ड्रॉप-ऑफ अनुसूचित जनजाति के छात्रों (10.6% से 6.8%), और अलग-अलग बच्चों (1.1% से 0.25%) के लिए अधिक गंभीर हैं, इनमें से प्रत्येक श्रेणी में महिला छात्रों के लिए और भी अधिक गिरावट आई हैं। उच्च शिक्षा में नामांकन में गिरावट और भी विकट है।

6.2.2 गुणवत्ता विद्यालयों तक पहुँच की कमी, गरीबी, सामाजिक मेल और सीमा शुल्क, और भाषा सहित कारकों की एक बहुलता का अनुसूचित जाति के बीच नामांकन और प्रति धारण की दरों पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है। अनुसूचित जातियों के बच्चों की पहुंच, भागीदारी और सीखने के परिणामों में इन अंतरालों को पूरा करना प्रमुख लक्ष्यों में से एक रहेगा। साथ ही, अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) जिन्हें ऐतिहासिक रूप से सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े होने के आधार पर पहचाना जाता है, इन पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

6.2.3 जन जातीय समुदाय और अनुसूचित जनजातियों के बच्चे भी विभिन्न ऐतिहासिक और भौगोलिक कारकों के कारण कई स्तरों पर नुकसान का सामना करते हैं। आदिवासी समुदायों के बच्चे अक्सर अपने

स्कूली शिक्षा को सांस्कृतिक और शैक्षणिक रूप से अप्रासंगिक और विदेशी पाते हैं। हालांकि, आदिवासी समुदायों के बच्चों के उत्थान के लिए कई प्रोग्रामेटिक हस्तक्षेप वर्तमान में हैं, और आगे भी जारी रहेंगे। यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष तंत्र बनाने की आवश्यकता है, कि आदिवासी समुदायों के बच्चों को इन हस्तक्षेपों का लाभ मिले।

6.2.4 अल्पसंख्यक भी स्कूल और उच्च शिक्षा में अपेक्षाकृत कम महत्व के हैं। नीति सभी अल्पसंख्यक समुदायों और विशेष रूप से उन समुदायों के बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हस्तक्षेपों के महत्व को स्वीकार करती है, जो शैक्षिक रूप से कमतर हैं।

6.2.5 नीति बच्चों को विशेष आवश्यकताएं (CWSN) या दिव्यांग के साथ बच्चे को प्रदान करने के लिए सक्षम तंत्र बनाने के महत्व को भी पहचानती है, किसी भी अन्य बच्चे के रूप में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर।

6.2.6 निम्नलिखित उप-वर्गों में उल्लिखित के रूप में स्कूली शिक्षा में सामाजिक श्रेणी के अंतराल को कम करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अलग रणनीति तैयार की जाएगी।

6.3 अध्याय 1-3 में चर्चा की गई ई.सी.ई.सी., मूलभूत साक्षरता और संख्या, पहुंच, नामांकन और उपस्थिति के बारे में महत्वपूर्ण समस्याएं और सिफारिशें विशेष रूप से प्रासंगिक और वंचित समूहों के लिए और महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, अध्याय 1-3 के उपायों को एस.ई.डी.जी. के लिए ठोस तरीके से लक्षित किया जाएगा।

6.4 इसके अलावा, विभिन्न सफल नीतियां और योजनाएं हैं। जैसे लक्षित छात्रवृति, माता-पिता को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए सशर्त नकद हस्तांतरण, परिवहन के लिए साइकिल प्रदान करना आदि, जिन्होंने निश्चित रूप से स्कूली प्रणाली में SEDG की भागीदारी में काफी वृद्धि की है। इन क्षेत्रों में सफल नीतियों और योजनाओं को पूरे देश में काफी मजबूत किया जाना चाहिए।

6.5 यह भी ध्यान में रखना आवश्यक होगा कि अनुसंधान यह पता लगाए कि कौन से उपाय विशेष रूप से कुछ SEDGs के लिए प्रभावी हैं। उदाहरण के लिए, साइकिल प्रदान करना और स्कूल तक पहुंच प्रदान करने के लिए साइकिल और पैदल चलने वाले समूहों को व्यवस्थित करना, विशेष रूप से महिला छात्रों की बढ़ती भागीदारी में विशेष रूप से शक्तिशाली तरीके दिखाए गए हैं - यहां तक कि कम दूरी पर - माता-पिता को सुरक्षा लाभ और आराम के कारण। विकलांगों के लिए कुछ बच्चों के लिए एक-पर-एक शिक्षक और ट्यूटर्स, सहकर्मी ट्यूशन, ओपन स्कूलिंग, उचित बुनियादी ढांचा और उपयुक्त तकनीकी हस्तक्षेप विशेष रूप से प्रभावी हो सकते हैं। गुणवत्ता वाले ई.सी.ई.सी. प्रदान करने वाले स्कूल उन बच्चों के लिए सबसे बड़ा लाभांश देते हैं, जो आर्थिक रूप से वंचित परिवारों से आते हैं। इस बीच, काउंसलर और / या अच्छी तरह से प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता जो छात्रों, अभिभावकों, स्कूलों और शिक्षकों के साथ काम करते हैं, और उपस्थिति और सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए शहरी गरीब क्षेत्रों में बच्चों के लिए विशेष रूप से प्रभावी पाए गए हैं।

6.6 डेटा से पता चलता है कि कुछ भौगोलिक क्षेत्रों में SEDGs का अनुपात काफी बड़ा है। इसके अलावा, ऐसे भौगोलिक स्थान हैं। जिनकी पहचान एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट के रूप में की गई है, जिन्हें

अपने शैक्षिक विकास को बढ़ावा देने के लिए विशेष हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है। इसलिए, यह सिफारिश की जाती है, कि शैक्षिक रूप से वंचित SEDGs से बड़ी आबादी वाले देश के क्षेत्रों को विशेष शिक्षा क्षेत्र (SEZ) घोषित किया जाना चाहिए। जहां सभी योजनाओं और नीतियों को सही मायने में बदलने के लिए, अतिरिक्त ठोस प्रयासों के माध्यम से अधिकतम लागू किया जाता हैं।

6.7 यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि महिलाओं ने सभी अधीनस्थ समूहों में कटौती की, जो सभी SEDGs का लगभग आधा हिस्सा था। दुर्भाग्य से, SEDGs का बहिष्कार और असमानता इन SEDGs में महिलाओं के लिए केवल प्रवर्धित हैं। नीति अतिरिक्त रूप से उस विशेष और आलोचनात्मक भूमिका को स्वीकार करती है जो महिलाएं समाज में और सामाजिक कार्य को आकार देने में निभाती हैं। इसलिए, लड़कियों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करना इन SEDGs के लिए शिक्षा के स्तर को बढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका है, न केवल वर्तमान में बल्कि भविष्य की पीढ़ियों में भी। नीति इस प्रकार अनुशंसा करती है, कि SEDGs के छात्रों को शामिल करने के लिए डिज़ाइन की गई नीतियों और योजनाओं को विशेष रूप से इन SEDGs में लड़कियों के प्रति लक्षित होना चाहिए।

6.8 इसके अलावा, भारत सरकार सभी लड़कियों और साथ ही ट्रांसजेंडर छात्रों के लिए समान गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने के लिए देश की क्षमता का निर्माण करने के लिए एक 'जेंडर-इंक्लूजन फंड' का गठन करेगी। राज्यों को यह सुविधा उपलब्ध कराने के लिए केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित प्राथमिकताओं को लागू करने के लिए कोष उपलब्ध करवाएगा, ताकि शिक्षा प्राप्त करने के लिए महिला और ट्रांसजेंडर बच्चों को मदद मिल सके (जैसे कि स्वच्छता और शौचालय, साइकिल, सशर्त नकद हस्तांतरण, आदि के प्रावधान)। धन प्रभावी सामुदायिक-आधारित हस्तक्षेपों का समर्थन करने और उन्हें पैमाना बनाने में सक्षम होगा, जो स्थानीय संदर्भ-विशिष्ट बाधाओं को संबोधित करता हैं, ताकि महिला और ट्रांसजेंडर बच्चों की पहुंच और शिक्षा में भागीदारी हो सके। अन्य SEDGs के अनुरूप उपयोग मुद्दों को संबोधित करने के लिए समान Address समावेश निधि 'योजनाएँ भी विकसित की जाएंगी। संक्षेप में, इस नीति का उद्देश्य किसी भी लिंग या अन्य सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह के बच्चों के लिए शिक्षा (व्यावसायिक शिक्षा सहित) तक पहुँच में किसी भी प्रकार की असमानता को समाप्त करना हैं।

6.9 नि:शुल्क बोर्डिंग सुविधाओं का निर्माण किया जाएगा - जवाहर नवोदय विद्यालयों के मानक से मेल खाते हुए - स्कूल स्थानों पर जहां छात्रों को दूर से आना पड़ सकता हैं, और विशेष रूप से उन छात्रों के लिए जो सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि से हैं, विशेष रूप से सभी बच्चों की सुरक्षा के लिए उपयुक्त व्यवस्था के साथ लड़कियाँ। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों को सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि की लड़कियों की गुणवत्ता वाले स्कूलों (ग्रेड 12 तक) में भागीदारी बढ़ाने के लिए मजबूत और विस्तारित किया जाएगा। उच्च-गुणवत्ता वाले शैक्षिक अवसरों को बढ़ाने के लिए, विशेष रूप से आकांक्षात्मक जिलों, विशेष शिक्षा क्षेत्रों और अन्य वंचित क्षेत्रों में देश भर में अतिरिक्त जवाहर नवोदय विद्यालय और केंद्रीय विद्यालय बनाए जाएंगे। बचपन की देखभाल और शिक्षा के कम से कम एक वर्ष को कवर करने वाले प्री-स्कूल वर्गों को केंद्रीय विद्यालय और देश के आस-पास के अन्य प्राथमिक स्कूलों में जोड़ा जाएगा, विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों में।

6.10 ECCE में विकलांग बच्चों को शामिल करने और समान भागीदारी सुनिश्चित करना और स्कूली शिक्षा प्रणाली को भी सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी। विकलांग बच्चों को फाउंडेशनल स्टेज से उच्च शिक्षा तक नियमित स्कूलिंग प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने में सक्षम बनाया जाएगा। विकलांग व्यक्तियों के अधिकार (RPWD) अधिनियम 2016 समावेशी शिक्षा को "शिक्षा की प्रणाली" के रूप में परिभाषित करता है, जिसमें बिना और बिना विकलांग छात्र एक साथ सीखते हैं और विकलांग छात्रों की विभिन्न प्रकार की शिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षण और सीखने की प्रणाली को उपयुक्त रूप से अनुकूलित किया जाता है। यह नीति RPWD अधिनियम 2016 के प्रावधानों के अनुरूप है, और स्कूली शिक्षा के संबंध में इसकी सभी सिफारिशों को पूरा करती हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करते समय NCERT यह सुनिश्चित करेगा कि विशेषज्ञ निकाय जैसे DEPWD के राष्ट्रीय संस्थानों के साथ परामर्श किया जाए।

6.11 इसके लिए, स्कूलों / स्कूल परिसरों में विकलांग बच्चों के एकीकरण, क्रॉस-विकलांगता प्रशिक्षण के साथ विशेष शिक्षकों की भर्ती और संसाधन केंद्रों की स्थापना के लिए संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे। जहाँ भी आवश्यकता हो, विशेष रूप से गंभीर या कई विकलांग बच्चों के लिए बाधा मुक्त पहुंच RPWD अधिनियम के अनुसार सक्षम होगी। विकलांग बच्चों की विभिन्न श्रेणियों में अलग-अलग जरूरतें होती हैं। स्कूल और स्कूल परिसर काम करेंगे और विकलांग बच्चों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप रहने और कक्षा में उनकी पूर्ण भागीदारी और समावेश सुनिश्चित करने के लिए सहायता तंत्र प्रदान करने के लिए समर्थन किया जाएगा। विशेष रूप से, सहायक उपकरण और उपयुक्त प्रौद्योगिकी-आधारित उपकरण, साथ ही पर्याप्त और भाषा-उपयुक्त शिक्षा -शिक्षण सामग्री (जैसे, बड़े प्रिंट और ब्रेल जैसे सुलभ स्वरूपों में पाठ्य पुस्तकें) उपलब्ध कराई जाएगी, ताकि विकलांग बच्चों को आसानी से एकीकृत किया जा सके। कक्षाओं में और शिक्षकों और उनके साथियों के साथ संलग्न। यह कला, खेल, और व्यावसायिक शिक्षा सहित सभी स्कूल गतिविधियों पर लागू होगा। NIOS भारतीय साइन लैंग्वेज सिखाने के लिए और इंडियन साइन लैंग्वेज का उपयोग करके अन्य बुनियादी विषयों को सिखाने के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले मॉड्यूल विकसित करेगा। विकलांग बच्चों की सुरक्षा और सुरक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिया जाएगा।

6.12 RPWD अधिनियम 2016 के अनुसार, बेंचमार्क विकलांग बच्चों के पास नियमित या विशेष स्कूली शिक्षा का विकल्प होगा। विशेष शिक्षकों के साथ संयोजन के रूप में संसाधन केंद्र गंभीर या कई विकलांगों के साथ शिक्षार्थियों के पुनर्वास और शैक्षिक आवश्यकताओं का समर्थन करेंगे और माता-पिता / अभिभावकों को ऐसे छात्रों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले होम स्कूलिंग और स्किलिंग प्राप्त करने में सहायता करेंगे। घर- आधारित शिक्षा गंभीर और गहन विकलांग बच्चों के लिए उपलब्ध विकल्प बनी रहेगी, जो स्कूलों में जाने में असमर्थ हैं। घर-आधारित शिक्षा के तहत बच्चों को सामान्य प्रणाली में किसी भी अन्य बच्चे के बराबर माना जाना चाहिए। इक्विटी के सिद्धांत और अवसर की समानता का उपयोग करके इसकी दक्षता और प्रभावशीलता के लिए घर-आधारित शिक्षा का एक ऑडिट होगा। आर. पी. डब्ल्यू. डी. अधिनियम 2016 के अनुसार इस ऑडिट के आधार पर घर-आधारित स्कूली शिक्षा के लिए दिशानिर्देश और मानक विकसित किए जाएंगे। जबकि यह स्पष्ट है, कि विकलांग बच्चों की शिक्षा राज्य की जिम्मेदारी हैं, प्रौद्योगिकी-आधारित समाधान का उपयोग किया जाएगा। माता-पिता देखभाल करने वालों को सक्रिय रूप

से अपने बच्चों की सीखने की जरूरतों को सक्रिय रूप से समर्थन करने के लिए सीखने की सामग्री के व्यापक पैमाने पर प्रसार के साथ-साथ माता-पिता / देखभाल कर्ताओं के उन्मुखीकरण को प्राथमिकता दी जाएगी।

6.13 अधिकांश कक्षाओं में विशिष्ट सीखने की अक्षमता वाले बच्चे होते हैं, जिन्हें निरंतर समर्थन की आवश्यकता होती है। अनुसंधान स्पष्ट है कि पहले इस तरह का समर्थन शुरू होता है, प्रगति की संभावना बेहतर होती है। शिक्षकों को ऐसे शिक्षण विकलांगों की पहचान करने और उनके शमन के लिए विशेष रूप से योजना बनाने में मदद की जानी चाहिए। विशिष्ट कार्यों में प्रत्येक बच्चे की शक्तियों का लाभ उठाने के लिए लचीला पाठ्यक्रम के साथ, और उचित मूल्यांकन और प्रमाणन के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के साथ बच्चों को अपनी गति से काम करने की अनुमति देने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी का उपयोग शामिल होगा। मूल्यांकन और प्रमाणन एजेंसियां, प्रस्तावित नए राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र, PARAKH सहित, दिशानिर्देश बनाएगी और इस तरह के मूल्यांकन के संचालन के लिए उपयुक्त उपकरण की सिफारिश करेगी, जो कि समता मूलक पहुंच और अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए उच्च शिक्षा (प्रवेश परीक्षाओं सहित) के लिए है, सीखने की अक्षमता वाले सभी छात्र।

6.14 विशिष्ट विकलांगता वाले (विकलांग सीखने सहित) बच्चों को कैसे पढ़ाया जा सकता हैं, इसके बारे में जागरूकता और ज्ञान सभी शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का एक अभिन्न अंग होगा। इसके साथ ही उनके अंडर प्रिटेशन को उलटने के लिए सभी अंडरप्रेस्ड समूहों के प्रति लैंगिक संवेदना और संवेदनशीलता होगी।

6.15 स्कूलों के वैकल्पिक रूपों, उनकी परंपराओं या वैकल्पिक शैक्षणिक शैलियों को संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। साथ ही, उन्हें NCFSE द्वारा निर्धारित विषय और शिक्षण क्षेत्रों को उनके पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए समर्थन दिया जाएगा, ताकि वे उच्च शिक्षा में इन स्कूलों से बच्चों के कम प्रदर्शन को समाप्त कर सकें। विशेष रूप से, विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन, हिंदी, अंग्रेजी, राज्य भाषाओं, या पाठ्यक्रम में अन्य प्रासंगिक विषयों को पेश करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी, जैसा कि इन स्कूलों द्वारा वांछित हो सकता हैं। यह इन स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को ग्रेड 1 से 12 के लिए परिभाषित सीखने के परिणामों को प्राप्त करने में सक्षम करेगा। इसके अलावा, ऐसे स्कूलों में छात्रों को NTA द्वारा राज्य या अन्य बोर्ड परीक्षाओं और मूल्यांकन के लिए उपस्थित होने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा और इस तरह उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिला लिया जाएगा। विज्ञान, गणित, भाषा, और सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में शिक्षकों की क्षमताओं को नए शैक्षणिक अभ्यासों के लिए अभिविन्यास सहित विकसित किया जाएगा। पुस्तकालयों और प्रयोगशालाओं को मजबूत किया जाएगा और पुस्तकों, पत्रिकाओं, आदि जैसे पर्याप्त पठन सामग्री और अन्य शिक्षण-शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

6.16 SEDGs के भीतर, और उपरोक्त सभी नीतिगत बिंदुओं के संबंध में, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक विकास में असमानताओं को कम करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। स्कूली शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के प्रयासों के तहत, समर्पित क्षेत्रों में विशेष छात्रावास, पुल पाठ्यक्रम, और शुल्क छूट और छात्रवृति के माध्यम से वित्तीय सहायता सभी SEDG से प्रतिभाशाली और मेधावी छात्रों को बड़े पैमाने पर विशेष रूप से माध्यमिक में प्रदान की जाएगी।

6.17 रक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में, राज्य सरकारें अपने माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.सी. के पंखों को खोलने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं, जिनमें आदिवासी बहुल क्षेत्रों में स्थित हैं। यह छात्रों की प्राकृतिक प्रतिभा और अद्वितीय क्षमता का दोहन करने में सक्षम होगा, जो बदले में उन्हें रक्षा बलों में एक सफल कैरियर की आकांक्षा करने में मदद करेगा।

6.18 SEDG के छात्रों के लिए उपलब्ध सभी छात्रवृतियाँ और अन्य अवसर और योजनाएँ एक एकल एजेंसी और वेबसाइट द्वारा समन्वित और घोषित की जाएंगी, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी छात्र इस तरह के 'सिंगल विंडो सिस्टम' पर सरलीकृत तरीके से आवेदन कर सकें।

6.19 उपरोक्त सभी नीतियां और उपाय सभी SEDGs के लिए पूर्ण समावेश और इक्विटी प्राप्त करने के लिए बिल्कुल महत्वपूर्ण हैं - लेकिन वे पर्याप्त नहीं हैं। स्कूल संस्कृति में बदलाव भी जरूरी है, स्कूल शिक्षा प्रणाली में सभी प्रतिभागियों, जिनमें शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रशासक, परामर्शदाता और छात्र शामिल हैं, सभी छात्रों की आवश्यकताओं, समावेशन और इक्विटी की धारणाओं, और सभी व्यक्तियों के सम्मान, गरिमा और गोपनीयता के प्रति संवेदनशील होंगे। इस तरह की शैक्षिक संस्कृति छात्रों को सशक्त व्यक्ति बनने में मदद करने के लिए सबसे अच्छा मार्ग प्रदान करेगी, जो बदले में समाज को अपने सबसे कमजोर नागरिकों के प्रति जिम्मेदार बनने में सक्षम बनाएगी। समावेश और इक्विटी शिक्षक शिक्षा का एक प्रमुख पहलू बन जाएगा (और स्कूलों में सभी नेतृत्व, प्रशासनिक और अन्य पदों के लिए प्रशिक्षण) सभी छात्रों के लिए उत्कृष्ट रोल मॉडल लाने के लिए SEDGs से अधिक उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों की भर्ती करने का प्रयास किया जाएगा।

6.20 शिक्षकों, प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताओं और परामर्शदाताओं द्वारा और साथ ही एक समावेशी स्कूल पाठ्यक्रम में लाने के लिए इसी परिवर्तन के माध्यम से छात्रों को इस नई स्कूल संस्कृति के माध्यम से संवेदनशील बनाया जाएगा। स्कूली पाठ्यक्रम में सभी व्यक्तियों के सम्मान, सहानुभूति, सहिष्णुता, मानवाधिकारों, लैंगिक समानता, अहिंसा, वैश्विक नागरिकता, समावेशन और इक्विटी के लिए मानवीय मूल्यों पर प्रारंभिक सामग्री शामिल होगी। इसमें विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं, लिंग पहचान आदि के बारे में अधिक विस्तृत ज्ञान शामिल होगा, जो विविधता के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता विकसित करेगा। स्कूल के पाठ्यक्रम में किसी भी पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता को हटा दिया जाएगा, और अधिक सामग्री को शामिल किया जाएगा जो सभी समुदायों के लिए प्रासंगिक और संबंधित हो।

समावेशी शिक्षा के बारे में जानने योग्य 8 बातें:

शिक्षार्थियों के लाभ से लेकर शिक्षकों की भूमिका तक, विकलांग लोगों के लिए समावेशी शिक्षा के बारे में जानने योग्य आठ बातें यहां दी गई हैं।

यूनिसेफ के अनुसार, विकलांग बच्चों के कभी स्कूल न जाने की संभावना 49% अधिक है, तथा प्राथमिक स्कूल न जाने की संभावना, सामान्य बच्चों की तुलना में 47% अधिक है।

समावेशी शिक्षा का मतलब है- मुख्यधारा की व्यवस्था में सभी बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा। सभी बच्चों को - विकलांग बच्चों सहित - एक ही कक्षा में एक साथ सीखने का अवसर और सहायता मिलती है। यह साबित हो चुका है, कि समावेशी शिक्षा सभी विद्यार्थियों के लिए बेहतर परिणाम देती हैं ओर इसे लागू

करना अक्सर सस्ता होता है। फिर भी यह अभी भी वास्तविकता नहीं है। शिक्षकों के महत्व से लेकर संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों पर प्रभाव तक, समावेशी शिक्षा के बारे में जानने योग्य 8 बातें यहां दी गई हैं।

1. शिक्षा तक पहुंच एक मानव अधिकार हैं:

हर बच्चे को स्कूल जाने का मौका मिलना चाहिए। शिक्षा तक पहुंच भूगोल, वित्तीय साधनों या बच्चे की विकलांगता के आधार पर नहीं होनी चाहिए। लेकिन, विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन (सी.आर.पी.डी. अनुच्छेद 24) में प्रतिबद्धताओं के बावजूद, विकलांग बच्चों को अक्सर शिक्षा से बाहर रखा जाता हैं। उप-सहारा अफ्रीका में विकलांग बच्चों की संख्या 70 मिलियन होने का अनुमान हैं। शारीरिक, सामाजिक, तकनीकी, वित्तीय या अन्य बाधाओं के कारण कई बच्चों को शिक्षा के अधिकार से वंचित किया जाता हैं। विकलांग बच्चों को इस अधिकार से वंचित करने से उनकी शिक्षा, सामाजिक संपर्क, उपलब्धियों और रोजगार के अवसरों पर आजीवन प्रभाव पड़ सकता हैं।

2. समावेशी शिक्षा से सभी बच्चों को लाभ मिलता हैं:

बाधाओं को दूर करके और विविधता को समायोजित करके, समावेशी शिक्षा प्रणालियाँ सभी बच्चों की पहुंच, स्वीकृति, भागीदारी और उपलब्धि को बढ़ावा देती हैं। समावेशी शिक्षा प्रणाली सभी विद्यार्थियों को विविधता का महत्व सिखाती हैं। वे अधिक खुले, लोकतांत्रिक और समान समाज के लिए आधार तैयार करते हैं। समावेशी शिक्षा आर्थिक रूप से भी समझदारी पूर्ण है। कम आय वाले देशों में विकलांग बच्चों के लिए विशेष रूप से स्कूल जैसे समानांतर शिक्षा ढांचे बनाना महंगा अक्षम है और कलंक और भेदभाव को मजबूत करता है।

3. समावेशी शिक्षा भेदभाव के चक्र को तोड़ती है:

विकलांग बच्चों को अक्सर भेदभाव, गरीबी और समाज से बहिष्कार के दुष्चक्र का सामना करना पड़ता हैं। शिक्षा इस चक्र को तोड़ने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है। गरीबी, पारिवारिक जीवन और सामुदायिक भेदभाव के कारण विकलांग बच्चे, विशेषकर लड़कियां, स्कूल से बाहर रह सकती हैं। यही कारण है, कि समावेशी शिक्षा के लिए “लाइट फॉर द वर्ल्ड” का दृष्टिकोण समुदाय स्तर पर समग्र व्यवहार परिवर्तन पर आधारित है। हम समुदाय के नेताओं से यह वकालत करते हैं, कि विकलांग बच्चों को शिक्षा का अधिकार हैं। हम माता-पिता को यह दिखाने के लिए रोल मॉडल का उपयोग करते हैं कि उनके विकलांग बच्चे भी बाकी सभी की तरह ही शिक्षा के हकदार हैं। जब विकलांग बच्चों को शिक्षा में शामिल किया जाता हैं, तो उन्हें समाज में पूर्ण रूप से भाग लेने का अवसर मिलता है।

4. विकलांगता के आंकड़े:

विकलांग लड़कियों के स्कूल में दाखिला लेने की संभावना कम होती हैं। विकलांग लड़कियों को और भी ज़्यादा भेदभाव का सामना करना पड़ता हैं। विकलांग लड़कों या बिना विकलांगता वाली लड़कियों की तुलना में उनके स्कूल में दाखिला लेने और वहाँ बने रहने की संभावना कम होती है। विकलांग लड़कियों के बारे में अक्सर आधिकारिक आंकड़े छिपाए जाते हैं, इसलिए स्कूलों और समुदायों को यह एहसास नहीं होता है कि उन्हें शिक्षा के अधिकार से वंचित किया जा रहा है। “लाइट फॉर द वर्ल्ड” में 2019 और 2022 के बीच जिन विकलांग बच्चों तक हम पहुंचे, उनमें से 57% लड़कियाँ थीं। लेकिन हम जानते हैं कि इससे

कहीं ज़्यादा विकलांग बच्चे हैं। हम लिंग और विकलांगता के आधार पर आंकड़ों को अलग-अलग करने का आह्वान करते हैं, ताकि सरकारों और विकास कार्यकर्ताओं के पास शिक्षा नीतियों की योजना बनाने और उन्हें लागू करने के लिए विश्वसनीय आंकड़े उपलब्ध हों।

हेमिप्लेजिया से पीड़ित अदिसा-काबोरे को बुर्किना फासो में "लाइट फॉर द वर्ल्ड" के प्रोजेक्ट पार्टनर OCADES (CARITAS) से पुनर्वास मिला। वह अब प्राइमरी स्कूल में पढ़ती है, जहाँ उसके पुनर्वास में शिक्षकों द्वारा सहायता की जाती हैं।

5. समावेशी शिक्षा जितनी जल्दी शुरू होगी, शिक्षार्थियों के लिए परिणाम उतने ही बेहतर होंगे:

यूनेस्को के अनुसार, उप-सहारा अफ्रीका में प्राथमिक विद्यालय आयु वर्ग के प्रत्येक पांच में से एक बच्चा स्कूल से बाहर है। बहिष्कार, अलगाव और भेदभाव कम उम्र से ही शुरू हो जाते हैं। इसलिए समावेशी प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास (आई.ई.सी.डी.) एक अधिक समान शिक्षा प्रणाली के केंद्र में है। गुणवत्तापूर्ण iECD विकलांग बच्चों के सीखने के परिणामों को बेहतर बनाता हैं, और उन्हें लंबे समय तक स्कूल में रखने में मदद करता है। इस वजह से "लाइट फॉर द वर्ल्ड" दानदाताओं और सरकारों से iECD में अपने निवेश को चौगुना करने का आग्रह करता है। "लाइट फॉर द वर्ल्ड" में समावेशी शिक्षा की निदेशक नफीसा बाबू कहती हैं - "आपातकालीन शिक्षा सहित सभी शिक्षा कार्यक्रमों को विकलांगों को शामिल करने की आवश्यकता है सबसे अधिक ज़रूरतमंद लोगों तक वित्तपोषण पहुंचाने के लिए अधिक न्यायसंगत वित्तपोषण की आवश्यकता है"।

6. प्रौद्योगिकी और शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं:

सहायक प्रौद्योगिकी और सुलभ डिजिटल मीडिया विकलांग शिक्षार्थियों के लिए क्रांतिकारी परिवर्तनकारी साबित हो सकते हैं। "लाइट फॉर द वर्ल्ड" कक्षा में सुलभ तकनीकें प्रदान करता हैं और शिक्षकों को उनका

उपयोग करने का प्रशिक्षण देता हैं। उदाहरण के लिए "बुर्किना फासो में हमारा बुकशेयर प्रोजेक्ट" अंधे या दृष्टिबाधित लोगों के लिए सुलभ पुस्तकों की एक विशाल डिजिटल लाइब्रेरी तक पहुँच प्रदान करता है। जबकि सहायक प्रौद्योगिकी संभावित लाभ प्रदान करती है, अच्छी तरह से प्रशिक्षित और योग्य शिक्षक समावेशी शिक्षा में सबसे आगे हैं। प्रौद्योगिकी कभी भी उस संबंध का स्थान नहीं ले सकती जो सीखने में सहायक है तथा बच्चों के एक साथ रहने और शिक्षक के मार्गदर्शन से मिलने वाली खुशहाली में सहायक हैं।

भाई नटेनाएल और अमानुएल, जो दोनों ही बधिर हैं, बधिरों के लिए पुनर्वास सेवाओं (RSDA) की सहायता से स्कूल जाते हैं। RSDA लाइट फॉर द वर्ल्ड का एक भागीदार है जो अदीस अबाबा, इथियोपिया में समावेशी शिक्षा लागू करता है।

7. समावेशी शिक्षा विश्व को सतत विकास लक्ष्य 4 हासिल करने में मदद करेगी:

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य 4 (एस.डी.जी 4) की प्रतिबद्धता समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना है। लाइट फॉर द वर्ल्ड की जेंडर विशेषज्ञ मथिल्डे उमुराज़ा कहती हैं एस.डी.जी. 4 को प्राप्त करने के लिए हमें समावेशी प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास (आई.ई.सी.डी.) में निवेश करने की आवश्यकता है। आई.ई.सी.डी. सभी बच्चों की क्षमता को खोलता हैं, क्योंकि यह विकलांगता का शीघ्र पता लगाने और पुनर्वास की अनुमति देता है, और यह देर से नामांकन की बाधाओं का लाभ उठाता है, जो सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्राप्ति से समझौता करता है।

8. समावेशी शिक्षा स्थायी परिवर्तन को बढ़ावा दे सकती है:

"लाइट फॉर द वर्ल्ड" में हमारा दृष्टिकोण एक ऐसे भविष्य का है, जहां प्रत्येक बच्चा, जिसमें विकलांग बच्चे भी शामिल हैं, एक साथ स्कूल जा सकें। लाइट फॉर द वर्ल्ड और हमारे सहयोगी विकलांग बच्चों की पहचान करते हैं, शिक्षा के महत्व पर सामुदायिक जागरूकता पैदा करते हैं, और सुलभ स्कूलों का डिज़ाइन तैयार करते हैं। हम शिक्षकों को समावेशी कक्षाओं का नेतृत्व करने और राष्ट्रीय नीतियों में इन परिवर्तनों को शामिल करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। हम स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी के लिए एक कक्षा की वकालत करते हैं - जहां सभी बच्चे अपनी विकलांगता की परवाह किए बिना एक साथ और एक-दूसरे से सीखते हैं। समावेशी शिक्षा कोई अच्छी बात नहीं है, यह एक समावेशी समाज के लिए एक आवश्यक शर्त है, जिसमें सभी लोग समान रूप से और पूरी तरह से भाग ले सकें। समावेशी शिक्षा को अपनाकर, हम स्थायी परिवर्तन और सभी के लिए अधिक समान समाज को बढ़ावा दे सकते हैं।

समावेशी शिक्षा की परिभाषाएं:

माइकल फिनग्रेस के अनुसार- "समावेशी शिक्षा मूल्यों सिद्धांतों और अभ्यासों का एक समूह है, जो सभी बालकों के लिए चाहे वह विशिष्टता रखते हो या नहीं रखते हो प्रभावशाली और अर्थपूर्ण शिक्षा की खोज करता है।"

स्टीफन और ब्लैकहार्ट के अनुसार- "शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ बाधित बालकों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था करना हैं, यह समान अवसर मनोवैज्ञानिक सोच पर आधारित है, जो व्यक्ति योजना के आधार पर उपयुक्त सामाजिक मानकीकरण और अधिगम को बढ़ावा देती है।"

समावेशी शिक्षा की विशेषताएं : -

1. समावेशी शिक्षा केवल अशक्त बालकों के लिए नहीं-

समावेशी शिक्षा से अभिप्राय केवल विशिष्ट बालकों के लिए विशिष्ट शिक्षा तक सीमित रहना नहीं है, बल्कि समावेशी शिक्षा का संबंध शिक्षा ग्रहण करने योग्य सभी बालकों से है।

2. शिक्षा एक मौलिक अधिकार-

शिक्षा के मौलिक अधिकार को सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप में अपनाना समावेशी शिक्षा की एक प्रमुख विशेषता है। शिक्षा की अन्य प्रजातियां भी बालकों की शिक्षा के अधिकार को मान्यता दी गई है लेकिन इस प्रकार की भावना सबसे अधिक शिक्षा पद्धति में निहित है।

3. सबके लिए शिक्षा और सबके लिए विद्यालयों का प्रावधान होना-

समावेशी शिक्षा में सभी के लिए शिक्षा और सबके लिए विद्यालयों का प्रावधान होना चाहिए। इस शिक्षा पद्धति में सामान्य और बाधित सभी बच्चों के लिए विद्यालयों में शिक्षा के प्रावधान रखे गए हैं, शिक्षा सबके लिए होनी चाहिए ना की कुछ विशेष बालकों के लिए।

4. विभिन्नता की पहचान-

समावेशी शिक्षा बालकों की विभिन्नताओं जैसे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि

की पहचान करती हैं। विभिन्नताओं के आधार पर बालकों की आवश्यकताओं के ध्यान में रखते हुए संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, सृजनात्मक विकास के अवसर प्रदान करनी चाहिए।

5. विविधता कोई समस्या नहीं-

बालकों की संख्या के साथ उनकी बढ़ती हुई व्यवस्थाएं इस पद्धति में कोई समस्या नहीं समझी जाती हैं। भाषा, धर्म, लिंग, संस्कृति, सामाजिक रूप से संबंधित होने और शारीरिक, मानसिक गुणों की व्यवस्था बालकों को एक दूसरे से सीखने समायोजित होने की बहुमूल्य अवसर प्रदान करती हैं।

6. पृथक्करण की विरोधी-

समावेशी शिक्षा के अंतर्गत शारीरिक रूप से बाधित बालक सामान्य बालक साथ-साथ सामान्य कक्षा में शिक्षा ग्रहण करते हैं। दिव्यांग बालकों को कुछ अधिक सहायता प्रदान की जाती हैं, इस प्रकार समावेशी शिक्षा दिव्यांग बालकों के पृथक्करण की विरोधी व्यावहारिक समाधान है।

7. शिक्षा का समान अवसर-

इस शिक्षा का ऐसा प्रारूप दिया गया है, जिससे विशिष्ट आवश्यकता वाले बालक को समान शिक्षा की आवश्यक प्राप्त हुई और वह समाज में अन्य लोगों की भांति आत्मनिर्भर होकर अपना जीवन यापन कर सकें।

8. सहयोग की भावना-

यह समाज में दिव्यांग और सामान्य बालकों के मध्य स्वस्थ सामाजिक वातावरण तथा संबंध बनाने में समाज के प्रत्येक स्तर पर सहायक है। समाज में एक दूसरे के मध्य दूरी कम करती है और आपसी सहयोग की भावना को बढ़ाती हैं।

समावेशी शिक्षा का क्षेत्र:

1. समावेशी बालकों की समस्याओं का अध्ययन-

यह समावेशी शिक्षा का विशाल क्षेत्र है, जिसके अंतर्गत समावेशी बालकों आधार शारीरिक मानसिक और बौद्धिक रूप से विकृत बालकों की समस्याओं को गहन रूप से अध्ययन किया जाता है।

2. समावेशी बालकों की समस्याओं के संबंध में अनुसंधान-

समावेशी बालकों की समस्याओं का अध्ययन करने के पश्चात उन समस्याओं का निराकरण करने के लिए अनुसंधान की आवश्यकता होती है जिन का परिणाम बालकों के लिए सकारात्मक होता हैं।

3. समावेशी बालकों का सर्वांगीण विकास-

समावेशी शिक्षा का क्षेत्र बालकों की शिक्षा विकास तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह बालक के सामाजिक व्यावहारिक और व्यवसायिक शारीरिक विकास के लिए भी उत्तरदायी है जिसके द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास संभव है।

समावेशी शिक्षा के मूल उद्देश्य:

विद्यालय में सभी के साथ सभी के लिए शिक्षा का अभिप्राय है कि समर्थ एवं असमर्थ बालकों को एक साथ सामान्य विद्यालय में एक साथ शिक्षा प्रदान की जाए।

- प्रारंभ से ही समर्थी एवं असमर्थी बालकों को समाज में एक साथ मिल-जुल कर रहने के लिए प्रेरित करना। मैत्रीपूर्ण भाव से एक दूसरे के कार्यों में सहयोग करना और समाज एकता बनाए रखने में योगदान देना।
- सभी के लिए शिक्षा का अभिप्राय है सभी बालकों के लिए शिक्षा, न कि लगभग सभी के लिए।
- समावेशी शिक्षा की अवधारणा को समझने और दिव्यांग छात्रों के लिए पाठशाला का रूपांतरण और उपयुक्त अध्यापन कार्य का निर्धारण करना।
- विभिन्न आवश्यकताओं वाले बालकों की आवश्यकता के अनुकूल शारीरिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण का निर्माण करना।

समावेशी शिक्षा का महत्व:

1. राष्ट्र का विकास-

देश की पूरी खुशहाली एक संगठन के लिए विकास एक अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता है, जिसमें सभी नागरिकों के योगदान की सदैव आवश्यकता होती हैं।

2. शिक्षा की सर्वव्यापकता या सार्वभौमिक विकास-

विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा को तभी सार्वभौमिक बनाया जा सकता है जब प्रत्येक बालक के गुणों एवं स्तरों आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा का विस्तार किया जाए। ऐसी शिक्षा मुख्य अवधारणा को ध्यान में रखते हुए शिक्षा पाठ्यक्रम निर्धारित करने पर बल देती है।

3. शिक्षा का स्तर बढ़ाना-

समावेशी शिक्षा ना केवल सबके लिए शिक्षा है बल्कि सबके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अवधारणा पर आधारित हैं। इस शिक्षा प्रणाली में सभी बच्चों के शारीरिक मानसिक संवेगात्मक एवं सामाजिक संस्कृति अवश्य गांव की पूर्ति के मूलभूत सिद्धांत पर पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों को लचीला बनाने पर विशेष बल दिया गया है।

4. सामाजिक समानता का उपयोग-

समावेशी शिक्षा के द्वारा अधिकारों और संभावनाओं से लाभान्वित होने की समानता का कार्यक्षेत्र समावेशी शिक्षा है। संवैधानिक समानता के सिद्धांतों का व्यक्तियों और समाज को तभी लाभ हो सकता है जब उन्हें कार्यान्वित किया जाए।

5. समाज के विकास के लिए-

समावेशी शिक्षा व्यक्तियों के सहयोग से समाज का निर्माण करता है व्यक्ति समाज के निर्माण की नींव है। व्यक्तियों की प्रगति परिश्रम सूझबूझ एवं प्रयत्नों से उनका व्यक्तिगत जीवन संवरता हैं।

समावेशी शिक्षा के सिद्धांत:

1. कोई भी निरस्त नहीं-

शारीरिक रूप से बाधित सभी बालकों को नि:शुल्क शिक्षा मिलनी चाहिए और सामान्य शिक्षण संस्थाओं में किसी बालक को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने का विकल्प किसी विद्यालय की व्यवस्था में नहीं है।

2. व्यक्तिगत विभिन्नता-

व्यक्तिगत विभिन्नता दो प्रकार की होती है-

- दो व्यक्तियों में अंतर।
- मनुष्य का स्वयं से भेद होना।

दूसरे शब्दों में कुछ छात्र अन्य छात्रों से अधिकांश गुणों में उड़ता हैं, भिन्न होते हैं जो शिक्षा की ओर विशेष झुकाव रखते हैं। ऐसे छात्रों के विशेष शिक्षण आवश्यकताएं विशिष्ट शिक्षा के माध्यम से पूरी करनी चाहिए।

3. नियंत्रित वातावरण-

जहां तक संभव हो शारीरिक रूप से बाधित बालकों और सामान्य बालकों की शिक्षा एक ही कक्ष में साथ-

साथ होनी चाहिए या कक्षा सामान्य हो सकती है। सामान्य कक्षा के छात्रों को न्यूनतम विघ्न डालने वाला वातावरण प्रदान करता है।

4. माता-पिता का सहयोग-

यदि शारीरिक रूप से बाधित बालकों के माता-पिता भी शिक्षण कार्यक्रम में रुचि लेते हैं, तो विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता हैं।

5. अविभेदी शिक्षा-

ऐसे विद्यार्थियों की पहचान करनी चाहिए जो विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव करते हैं। जिससे उन्हें दी जाने वाली शिक्षा का उपयुक्त स्वरूप सुनिश्चित किया जा सके प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत रूप से परीक्षा होनी चाहिए।

समावेशी शिक्षा के लिए कुछ रणनीतियाँ और कुछ संसाधन:

समावेशी शिक्षा यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग (UDL) के साथ-साथ चलती है, जो पाठ्यक्रम विकास के सिद्धांतों का एक समूह हैं जो सभी छात्रों को सीखने का समान अवसर देता है। नेशनल सेंटर ऑन यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग के अनुसार, "UDL अनुदेशात्मक लक्ष्य, विधियाँ, सामग्री और आकलन बनाने का एक खाका प्रदान करता है जो सभी के लिए काम करता है। एक एकल, एक आकार सभी के लिए फिट नहीं होता हैं, बल्कि लचीले दृष्टिकोण होते हैं, जिन्हें व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए अनुकूलित और समायोजित किया जा सकता है।" UDL हार्वर्ड के प्रोफेसर हॉवर्ड गार्डनर द्वारा प्रतिपादित मल्टीपल इंटेलिजेंस के सिद्धांत के साथ कई समानताएँ साझा करता हैं, जिनके काम ने इस बात का दस्तावेजीकरण किया है कि किस हद तक छात्रों के पास विभिन्न प्रकार के दिमाग होते हैं और इसलिए वे अलग-अलग तरीकों से सीखते, याद रखते, प्रदर्शन करते और समझते हैं।"

समावेशी शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है:

अध्ययनों से पता चला है कि समावेशी कक्षाएँ विकलांग बच्चों और उनके साथियों के लिए लाभ प्रदान करती हैं। बच्चों को विशेष निर्देश देने के लिए कक्षा से बाहर निकालने के बजाय, समावेशी कक्षा में विशेष शिक्षा, शिक्षक कक्षा में आते हैं। यह सामान्य शिक्षा, शिक्षकों और विशेषज्ञों को एक ही सीखने के माहौल में एक साथ काम करने की अनुमति देता है। जिससे सभी छात्रों को लाभ होता हैं, जिन्हें अतिरिक्त संसाधन और सहायता प्रदान की जाती है। इस सहायता के परिणामस्वरूप अक्सर विकलांग छात्रों के साथ-साथ बिना विकलांगता वाले छात्रों को भी अधिक शैक्षणिक लाभ मिलता हैं।

थिंक इंक्लूसिव ने 2001 के एक अध्ययन की रिपोर्ट दी जिसमें "सामान्य शिक्षा और स्व-निहित कक्षाओं में विकलांग छात्रों की शैक्षणिक प्रगति की दो वर्षों में जांच की गई। सामान्य शिक्षा में विकलांग छात्रों में से 47.1% ने गणित में प्रगति की, जबकि स्व-निहित कक्षाओं में 34% ने, दोनों ही स्थितियों में पढ़ने की प्रगति तुलनीय थी। दिलचस्प बात यह है कि अध्ययन में पाया गया कि जब विकलांग छात्र मौजूद थे, तो सामान्य साथियों ने गणित में अधिक प्रगति की। शोधकर्ताओं ने परिकल्पना की थी कि इन कक्षाओं में अतिरिक्त सहायता और समर्थन ने सभी छात्रों के लिए लाभ पैदा किया।"

अतिरिक्त लाभों में विकलांग छात्रों के लिए बेहतर संचार कौशल और उन्नत सामाजिक कौशल शामिल हैं, साथ ही विघटनकारी व्यवहार और अनुपस्थिति की कम घटनाएं भी शामिल हैं।

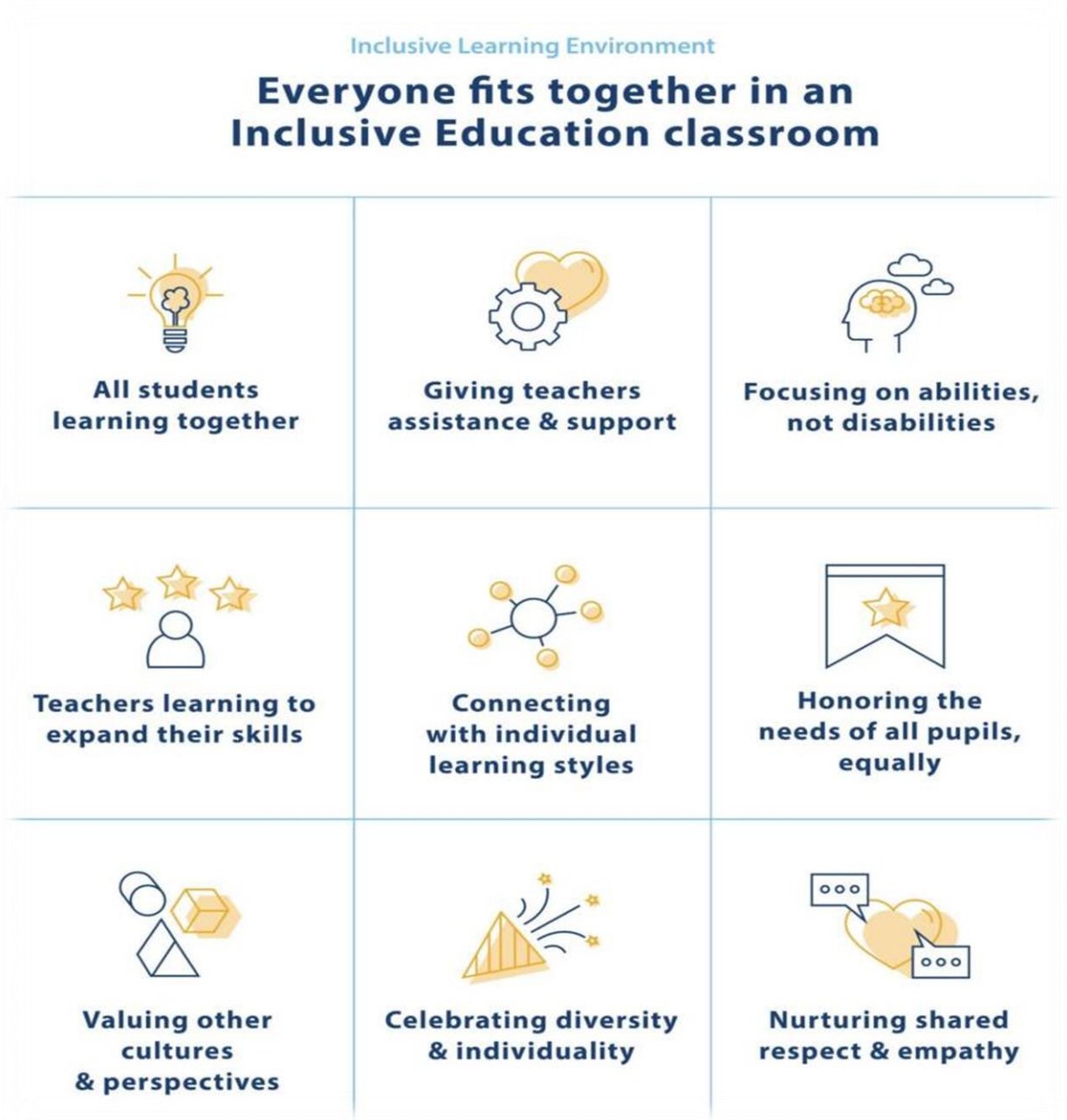

समावेशी शिक्षा रणनीतियाँ:

क्या आप अपनी कक्षा में समावेशी शिक्षा का माहौल लाने के लिए तैयार हैं, ऐसा करने का मतलब है। यथास्थिति को चुनौती देना, पाठ्यक्रम की बाधाओं को दूर करना और सभी शिक्षार्थियों को शामिल करने और सभी छात्रों को समान रूप से सेवा प्रदान करने के लिए शैक्षिक लक्ष्यों को दिलचस्प तरीके से प्रस्तुत करना। समावेशी कक्षा और पाठ्यक्रम को डिज़ाइन करते समय विचार करने के लिए नीचे कुछ महत्वपूर्ण रणनीतियाँ दी गई हैं।

सुलभ कक्षाएं बनाने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन सिद्धांतों का उपयोग करें:

यू.डी.एल. (UDL) सिद्धांतों का एक समूह है, जो हर छात्र को सीखने का समान अवसर प्रदान करने की

इच्छा से पैदा हुआ था। इस विचार के आधार पर कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अनूठी और व्यक्तिगत सीखने की शैली होती है। यू.डी.एल. के अनुसार, तीन प्राथमिक मस्तिष्क नेटवर्क इस बात के लिए जिम्मेदार हैं कि कोई व्यक्ति कैसे सीखता है। मान्यता नेटवर्क, रणनीतिक नेटवर्क और भावात्मक नेटवर्क। यू.डी.एल. के तीन मुख्य सिद्धांत - प्रतिनिधित्व (सीखने का क्या), क्रिया और अभिव्यक्ति (सीखने का तरीका), जुड़ाव (सीखने का क्यों) - इन तीन मस्तिष्क नेटवर्क के आधार पर बनाए गए थे। यू.डी.एल. की नींव को समझना - सिद्धांत और मस्तिष्क नेटवर्क - उन शिक्षकों के लिए अनिवार्य है जो कक्षा में यू.डी.एल. को लागू करना चाहते हैं। नेशनल सेंटर ऑन यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग में सार्वभौमिक डिज़ाइन में रुचि रखने वाले शिक्षकों के लिए संसाधनों और सूचनाओं की अधिकता हैं। जर्नल में छपे एक लेख में उन्होंने कहा - "आप हर एक (दिशानिर्देश) को हर एक पाठ पर लागू नहीं करेंगे। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन से आपके सीखने के लक्ष्यों के लिए प्रासंगिक हैं। एक पाठ या गतिविधि से शुरुआत करें और फिर उससे सफलता प्राप्त करें और फिर अपने पाठ्यक्रम के अन्य भागों पर नज़र डालना शुरू करें।"

विभिन्न प्रकार के अनुदेशात्मक प्रारूपों का उपयोग करें-

सार्वभौमिक डिजाइन सिद्धांत का पहला सिद्धांत सीखने का क्या है। यह "प्रतिनिधित्व के कई साधनों" का उपयोग करने के लिए कहता हैं। जबकि कुछ छात्र दृश्य शिक्षार्थी होते हैं, अन्य लोग जानकारी को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, जब इसे पाठ के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है या जब इसे मौखिक रूप से बोला जाता है या गतिज सीखने के माध्यम से पढ़ाया जाता हैं। कुछ छात्र उपरोक्त के संयोजन के साथ सबसे अच्छा करते हैं। जबकि ये विभेदित शिक्षण विधियाँ विकलांग छात्रों की ज़रूरतों का समर्थन कर सकती हैं वे पूरे कक्षा में निर्देश की विविधता भी प्रदान करती हैं जिससे प्रत्येक छात्र को अपने तरीके से सीखने का अवसर मिलता है। इसी तरह जानकारी प्रस्तुत करने और छात्रों को शामिल करने के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग करना समावेशी कक्षाओं में महत्वपूर्ण हैं। याद रखें कि सार्वभौमिक डिजाइन सिद्धांत का सिद्धांत दो "कार्रवाई और अभिव्यक्ति के कई साधनों" का उपयोग करने के लिए कहता हैं। कुछ छात्रों को लग सकता हैं कि उनके लिए अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा आउटलेट और साधन लेखन के माध्यम से आता है, जबकि अन्य मौखिक प्रस्तुति देना नाटक करना या कला का एक टुकड़ा बनाना पसंद कर सकते हैं। प्रत्येक छात्र अलग है और उन्हें अपने ज्ञान को उन तरीकों से व्यक्त करने का अवसर दिया जाना चाहिए जो उनके लिए सबसे अच्छा काम करते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षक छात्रों को शामिल करने के लिए सामग्री और माध्यमों की विविधता का उपयोग कर सकते हैं। माध्यमों के उदाहरणों में व्याख्यान और पाठ के पारंपरिक माध्यमों के अलावा थिएटर, कला, वीडियो और कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर शामिल हो सकते हैं। विभिन्न शिक्षण तकनीकों और माध्यमों का उपयोग करके, शिक्षक न केवल उन छात्रों की बल्कि पूरी कक्षा की सहभागिता बढ़ा सकते हैं जो सीखने और अभिव्यक्ति की एक विशेष शैली पर प्रतिक्रिया करते हैं।

अपने विद्यार्थियों के IEP/504 को जानें-

सभी के लिए एक समान सीखने का माहौल बनाने के लिए, विद्यार्थियों के IEP या 504 योजनाओं से खुद को परिचित करना महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास 504 या IEP योजना वाला कोई विद्यार्थी हैं तो आपसे कानूनी तौर पर 504 या IEP में उल्लिखित किसी भी आवश्यक व्यवस्था को करने की आवश्यकता है। आप विद्यार्थी की विशिष्ट आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए स्कूल काउंसलर या शिक्षण विशेषज्ञों के साथ काम कर सकते हैं। समावेशी शिक्षा की अवधारणा की तरह 504 को यह सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था कि विकलांग विद्यार्थियों को नियमित कक्षा के माहौल में सीखने की अनुमति दी जाए, जबकि उन्हें अभी भी आवश्यक सेवाएं, शैक्षिक सहायता या व्यवस्थाएं प्रदान की जाती हों। IEP/504 से केवल थोड़ा अलग है - अंतर इतना है कि IEP वाले विद्यार्थियों को नियमित कक्षा के बाहर अतिरिक्त शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता हो सकती हैं।

व्यवहार प्रबंधन योजना विकसित करें-

विघटनकारी कक्षा व्यवहार न केवल शिक्षक को प्रभावित कर सकता हैं बल्कि कक्षा में अन्य छात्रों को भी प्रभावित कर सकता हैं। व्यवहार प्रबंधन योजना विकसित करने से आपको उस अपरिहार्य क्षण के लिए तैयार होने में मदद मिल सकती है। जब कोई छात्र या छात्र विघटनकारी व्यवहार प्रदर्शित करते हैं - इस समझ के साथ कि कुछ व्यवहार दूसरों की तुलना में बहुत कम परिणाम वाले होते हैं (बारी से बात करना बनाम अवज्ञाकारी या आक्रामक होना)। व्यवहार योजना को माता-पिता और छात्रों के साथ साझा किया जाना चाहिए ताकि सभी को अपेक्षाओं और परिणामों के बारे में पता हो यदि उन अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया जाता हैं। सबसे प्रभावी योजनाओं में आमतौर पर बहुत अधिक सकारात्मक सुदृढ़ीकरण और अपेक्षाओं की स्पष्ट समझ शामिल होती है। कई अलग-अलग प्रकार की व्यवहार प्रबंधन योजनाएं हैं जिन्हें आप अपनी कक्षा की जरूरतों के आधार पर लागू कर सकते हैं। जिसमें एक संपूर्ण समूह योजना, एक छोटा समूह योजना, एक व्यक्तिगत योजना या विशेष रूप से चुनौती पूर्ण छात्रों के लिए बनाई गई व्यक्तिगत योजना शामिल हैं।

शिक्षकों के लिए समावेशी शिक्षण संसाधन:

- समावेशी स्कूल नेटवर्क - ISN उन परिवारों, स्कूलों और समुदायों के लिए एक डिजिटल संसाधन हैं जो प्रभावी समावेशी स्कूलों को डिजाइन और लागू करना चाहते हैं। वे मूल्यांकन उपकरण, सहयोग रणनीतियों, प्रौद्योगिकी सलाह और बहुत कुछ सहित कई प्रकार के संसाधन प्रदान करते हैं।
- नेशनल सेंटर फॉर लर्निंग डिसेबिलिटी - एन.सी.एल.डी. विकलांग लोगों के लिए वकालत करता है और माता-पिता, युवा वयस्कों, पेशेवरों और शिक्षकों के लिए कार्यक्रम और संसाधन प्रदान करता हैं। वे विकलांगता से संबंधित कई विषयों पर रिपोर्ट और अध्ययन भी प्रकाशित करते हैं और सीखने और ध्यान संबंधी समस्याओं वाले छात्रों के लिए छात्रवृति की जानकारी प्रदान करते हैं।
- राइटस्लॉ उन लोगों के लिए एक बेहतरीन संसाधन है जो विशेष शिक्षा कानून, शिक्षा कानून और विकलांग बच्चों के लिए वकालत के बारे में अधिक जानना चाहते हैं या अद्यतन रहना चाहते हैं।
- TASH वकालत, शोध, व्यावसायिक विकास, नीति और सूचना तथा माता-पिता, परिवारों और स्व-अधिवक्ताओं के लिए संसाधनों के माध्यम से समावेशी समुदायों को आगे बढ़ाने के लिए काम करता हैं। वह एक ब्लॉग, वार्षिक रिपोर्ट, एक पॉडकास्ट और बहुत कुछ सहित कई अलग-अलग प्रकाशन प्रदान करते हैं।
- ASCD - पर्यवेक्षण और पाठ्यक्रम विकास संघ (ASCD) समावेशी शिक्षा तक सीमित न रहकर कई शैक्षिक विषयों को शामिल करता है। यह सभी विषयों और ग्रेड स्तरों के शिक्षकों के लिए एक बेहतरीन संसाधन है, चाहे वे एक समावेशी स्कूल बनाना चाहते हों या कक्षा में अपनी प्रभावशीलता को बेहतर बनाने के लिए नई रणनीतियाँ ढूँढ़ना चाहते हों।

निष्कर्ष

इस लेख में समावेशी शिक्षा की समझ और प्रथाओं तथा समावेशी शिक्षा के विकास में मुख्य चुनौतियों पर चर्चा की गई है। इसमें केवल शोध साहित्य में सामने आए व्यापक प्रासंगिकता के मुद्दों पर ही चर्चा की गई है। विषय-वस्तु में समावेशी शिक्षा की परिभाषाओं से जुड़े तत्व शामिल हैं, जो क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर दोनों आयामों से संबंधित हैं, समावेशी शिक्षा की प्रथाएँ, समावेशी शिक्षा के लाभ और समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षक की क्षमता।

समावेशी शिक्षा को कैसे परिभाषित किया जाए, इस बारे में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के बीच आम सहमति है। कई राष्ट्र इन परिभाषाओं का समर्थन करते हैं, जो सभी छात्रों के लिए समान शैक्षिक अधिकार सुरक्षित करने के लिए समावेशी शिक्षा को एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में महत्व देते हैं। समावेशी शिक्षा के पीछे मूल विचार हावी और आम लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय से संबंधित हैं। आदर्श रूप से समावेशन एक बहुआयामी मुद्दा प्रतीत होता है, जहाँ विभिन्न तत्व एक-दूसरे का समर्थन या कमजोर कर सकते हैं।

मूल्य के दृष्टिकोण से समावेशी शिक्षा को विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले सभी छात्रों से संबंधित होना चाहिए, न कि केवल विकलांग छात्रों से, जो कि वर्तमान में प्रमुख दृष्टिकोण है। इस संबंध में, एक एकल तत्व समावेशन के सबसे लगातार मानदंड के रूप में दिखाई देता है वह है छात्र प्लेसमेंट, जहां शिक्षण

होता है और किसके साथ होता है। समावेशी शिक्षा और विशेष शिक्षा के बीच घनिष्ठ संबंध ने प्लेसमेंट को अन्य सभी छात्रों के साथ मिलकर पढ़ाया जाना समावेशन में एक महत्वपूर्ण तत्व बना दिया है, जो एकीकरण के मामले में पहले जो हुआ था उसके समानांतर है। किसी भी छात्र को उसके साथियों से अलग करने या अलग करने से बचने के लिए प्लेसमेंट व्यवहार में अक्सर समावेशन का सबसे आम और एकल-प्रमुख मानदंड प्रतीत होता है। कुछ देशों में, सभी छात्रों के लिए शिक्षा तक पहुंच को भी समावेशन से जोड़ा गया है।

हालांकि, व्यावहारिक समावेशी शिक्षा में चुनौती कार्यान्वयन की कठिनाइयाँ हैं। राष्ट्रों के बीच मतभेद हैं, लेकिन उनमें से कोई भी वास्तव में एक ऐसी स्कूल प्रणाली का निर्माण करने में सफल नहीं हुआ है जो समावेश के आदर्शों और इरादों पर खरा उतरती हो। इससे बहुत दूर आदर्शों और अभ्यास के बीच संबंध आम तौर पर कमजोर होता है, जो किसी वास्तविक राजनीतिक प्राथमिकता की कमी को दर्शाता है, जो कि पहले संदर्भित ओईसीडी (OECD) के निष्कर्षों में से एक है। समावेशी शिक्षा की परिभाषाओं को कैसे लागू किया जाए, छात्रों के किन समूहों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, शिक्षा तक पहुंच के बारे में और शैक्षिक नीति में सुसंगतता की कमी के बारे में असहमति से भी कार्यान्वयन की कठिनाइयाँ आती हैं। समावेशी शिक्षा शास्त्र के क्षेत्र में शिक्षकों की योग्यताएँ खराब रही हैं। समावेशी शिक्षा और शिक्षा शास्त्र के प्रभावों का दस्तावेजीकरण भ्रामक है।

समावेशी शिक्षा को सफलतापूर्वक लागू करने की दिशा में आगे बढ़ने के बारे में कुछ सरल उत्तर हैं। राष्ट्र अलग-अलग हैं, चुनौतियाँ अलग-अलग हैं और स्कूल भी अलग-अलग हैं। सभी संस्थानों को अपनी प्रक्रियाएँ उसी स्थान से शुरू करनी चाहिए जहाँ वे खड़े हैं। यह विचार कि अब हम जानते हैं कि समावेश क्या है, और अब कार्यान्वयन अगला है, इसलिए स्थिति की वास्तविकताओं के अनुरूप नहीं है।

समावेशी शिक्षा की परिभाषा और व्यवहार से स्वतंत्र, एक मुद्दा सभी के लिए महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। यह कक्षाओं में शैक्षिक गुणवत्ता विकसित करने का संघर्ष है ताकि सभी छात्र समावेशी शिक्षा से लाभान्वित हों, भले ही कोई भी समावेश की किसी भी परिभाषा का समर्थन करता हो। इन परिणामों के लिए शिक्षकों की योग्यताएँ निर्णायक हैं। समावेशी शिक्षा में पहुँच और प्लेसमेंट के महत्व पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है, शैक्षणिक गुणवत्ता के विकास की कीमत पर इसलिए समावेशी शिक्षा को साकार करने में सक्षम होने के लिए हमें शिक्षा के इस विशेष रूप में शिक्षकों की योग्यताओं को और विकसित करना होगा। इसे व्यवस्थित रूप से किया जाना चाहिए, और अनुभवजन्य रूप से प्रलेखित किया जाना चाहिए। समावेशी शिक्षा में शामिल चुनौतियों को उजागर करना और शिक्षकों द्वारा उनका सामना करने के तरीके विकसित करना महत्वपूर्ण होगा ऐसा करने में समय और प्रयास लगेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ: -

1. https://www.light-for-the-world.org/news/8-things-to-know-about-inclusive-education/
   Date: 08.09.2023
   Writer: Light for the world
2. https://www.myeducational.in/2023/02/%20samaveshi%20shiksha.html
   Date: February 18, 2023
   Writer: My Educational
3. https://www.msudenver.edu/why-inclusive-practices-are-essential-in-education/

Date: 29 November, 2022
Writer: MSU Denver
4. https://nep2020.hinsoli.com/2020/08/2020_27.html
Date: August 03, 2020
Writer: Het Hinsoli
5. https://www.ekawaz18.com/2019/10/Describe-the-meaning-definitions-characteristics-objectives-requirements-and-principles-of-inclusive-education.html
Date: October 21, 2019
Writer: Ekawaz18